समाजदर्शी शोध पत्रिका
SAMAJDARSHI SHODH PTRIKA

अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका (त्रैमासिक)

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL (QUARTERLY)

(PEER REVIEWED JOURNAL)

वर्ष-2, अंक-8 जनवरी - मार्च 2017 ISSN : 2395 - 0374

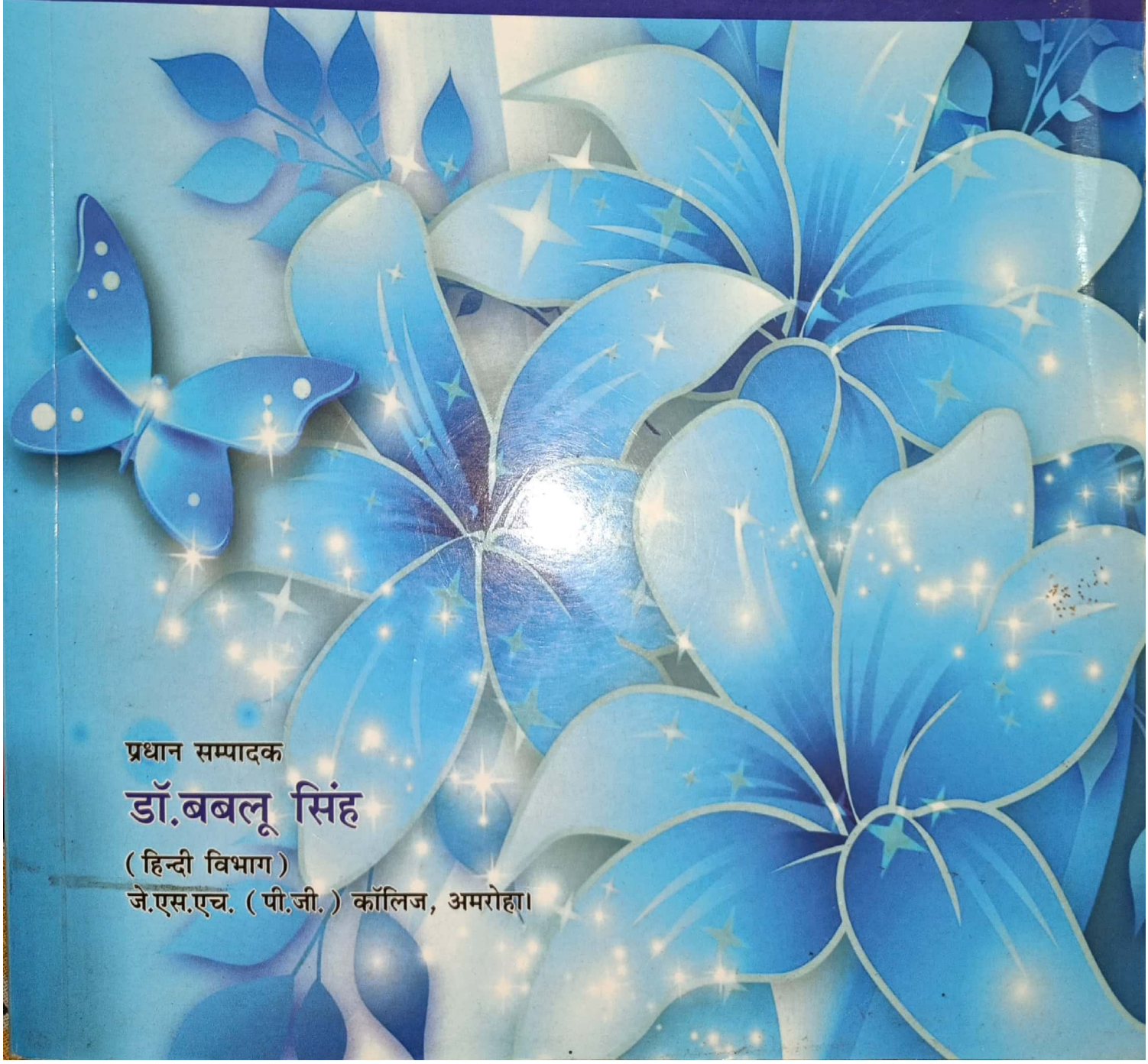

प्रधान सम्पादक

डॉ.बबलू सिंह

(हिन्दी विभाग)

जे.एस.एच. (पी.जी.) कॉलिज, अमरोहा।

Scanned by CamScanner

समाजदर्शी शोध पत्रिका

साहित्य, शिक्षा, वाणिज्य, मानविकी एवं विज्ञान विषयों की समाजदर्शी
द्विभाषिक त्रैमासिक अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका (PEER REVIEWED JOURNAL)
वर्ष-2 अंक-8 (जनवरी 2017 से मार्च 2017) ISSN No. 2395 - 0374

सम्पादक मण्डल

मुख्य संरक्षक :
डॉ. तिलक सिंह, डी.लिट्

प्रधान सम्पादक :
डॉ. बबलू सिंह, डी.लिट् सहायक प्रोफेसर
हिन्दी विभाग-जे.एस.एच. (पी.जी.) अमरोहा(उ0प्र0)

सम्पादक :
डॉ. अजय कुमार, सहायक प्रोफेसर
हिन्दी विभाग - महामाया राजकीय महाविद्यालय
कौशाम्बी (उ0प्र0)

सहसम्पादक :
डॉ० हेमन्तपाल घृतलहरे
सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग
शासकीय महाविद्यालय सनावल,
जिला-बलरामपुर (छत्तीसगढ़)

उपसम्पादक :
डॉ. श्रीमती आराधना कुमारी
डॉ. निखिल कुमार दास
डॉ. वीर वीरेन्द्र सिंह
डॉ. उमापति

प्रबन्ध सम्पादक :
डॉ. मनन कौशल
डॉ.प्रवीण कुमार
डॉ. सुनील कुमार
डॉ. धर्मेन्द्र कुमार

परीक्षक मण्डल

साहित्य :
डॉ. मनु प्रताप सिंह
डॉ. श्रीमती कविश्री जायसवाल
डॉ. श्रीमती संयुक्ता चौहान
डॉ. रामविलास यादव
डॉ. श्रीमती स्वेता पूठिया
डॉ. भूवाल सिंह
डॉ. श्रीमती सुमन अग्रवाल
डॉ. देशमित्र त्यागी
डॉ. गरिमा सिंह
डॉ. बबीता त्यागी
डॉ. संजय जौहरी
डॉ० अभिषेक कुमार पटेल

शिक्षा :
डॉ. प्रवेश कुमार
डॉ. नितिन कुमार

मानविकी एवं वाणिज्य :
डॉ. अनिल रायपुरिया
डॉ. हरेन्द्र कुमार
डॉ. रमेश चन्द

विज्ञान :
डॉ. सौरभ अग्रवाल
डॉ. लल्लन प्रसाद
डॉ. राजेश कुमार पाल
डॉ. प्रवेश कुमार

GURU GHASIDAS SATNAM FOUNDATION
PAMGARH 495554

Scanned by CamScanner

अनुक्रमणिका

भाषाविज्ञान की दृष्टि से अवधी का मूल्यांकन	डॉ. बबलू सिंह	6
स्वामी विवेकानन्द जी के जनशिक्षा सम्बन्धी विचारों का अध्ययन	डा.धर्मेन्द्र सिंह/महेश कुमार	11
भारतीय दर्शन और समाज-व्यवस्था	डॉ.धीरेन्द्र कुमार/श्रीमती आदर्श कान्ता	16
मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक विचारों का अध्ययन एवं वर्तमान भारतीय शिक्षा में प्रासंगिकता	श्रीमती वन्दना रानी/ डॉ.समी उर्रहमान ख़ान सूरी	20
बालक के सामाजिक विकास में परिवार की महती भूमिका	अवनीश कुमार/डा०धर्मेन्द्र सिंह/रमेश सिंह	27
श्रृंखला की कड़ियाँ' में प्रतिरोध चेतना	डॉ.पूनम	31
अम्बेडकर चिन्तन और उनका आन्दोलन	डॉ.मनु प्रताप, डी.लिट्	34
शब्द बोध का स्वरूप	निर्मला	42
'बिहारी और सतसई की प्रासंगिकता	राजकमल शर्मा	46
उच्च शिक्षा में गुणात्मकता पद्धति	डॉ.हेमलता सुमन	52
पीलीभीत जनपद के विस्थापित बंगाली शरणार्थियों के पारिवारिक जीवन में होने वाले परिवर्तन का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन	श्रीमती रिन्कू मण्डल/डॉ. राहुल त्यागी	57
मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों के सामाजिक आर्थिक स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन	त्रेता सिरोही/ड़ॉ०धर्मेन्द्र सिंह/श्वेता गुप्ता	61
वर्तमान समस्याओं के समाधान में क्रियात्मक अनुसंधान की उपादेयता	रश्मि चौधरी/डॉ०धर्मेन्द्र सिंह/सुनीता	66
गुरु घासीदास की यूटोपिया-'सतलोक'	डॉ.हेमन्त पाल घुतलहरे	69
अलीगढ़ जनपद (उ.प्र.) का पर्यावरणीय परिदृश्य -एक भौगोलिक अध्ययन	डा.संजय शाही	79
गाँधीवाद : एक पुनर्दृष्टि	डॉ.अरविन्द कुमार	88
बौद्ध-संस्कृत-साहित्य में अश्वघोष का दार्शनिक अध्ययन	उमापति	94
Nutritional Needs and Issues During Adolescence	Dr.Asha/Mohini Tyagi	100
MARKETING METHODS : 9 P'S OF MARKETING (Conversations in Marketing the first in a series.)	Manak Arora	103
Thoughts Of Dr. Ambedkar on Education	Anita Kumari	108

●●●

Scanned by CamScanner

ISSN No. 2395 - 0374
जनवरी से मार्च 2017, अंक - 8

गुरु घासीदास की यूटोपिया-'सतलोक'

डॉ.हेमन्त पाल घृतलहरे
सहायक प्राध्यापक हिन्दी
शासकीय महाविद्यालय सवावल
जिला बलरामपुर (छत्तीसगढ़)।

भारत संतो महापुरूषों का देश है। इस देश के तमाम संतो महापुरूषों ने न केवल अपने समय और स्थान को प्रभावित किया है, बल्कि वैश्विक परिप्रेक्ष्य में उनके संदेश समय और स्थान की सीमाओं से परे आज भी प्रासंगिक है। मानव जीवन को बेहतर बनाने के उनके संदेश कालातीत है। ये संत जब अपनी वाणी से उपदेश करते है तो वह एकांगी या एक आयामी नही होता बल्कि जीवन के समस्त क्षेत्रों में मानव का मार्गदर्शन होता है, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, शारीरिक, मानसिक, साँस्कृतिक, वैचारिक, आत्मिक एवं आध्यात्मिक जगत से उनके संदेश जुड़े होते है।

महात्मा बुद्ध, महावीर, रैदास, कबीर, गोरख, नानक,दादू आदि संतों की परम्परा संत गुरूघासीदास से जुड़कर हम तक वर्तमान स्वरूप में पहुँचती है। मानवतावादी संतों की सूची में संत गुरूघासीदास भारत के एक महान क्रांतिकारी संत के रूप में हमारे सामने आते है।

इन संतों को केवल भक्त रूप में ही नही देखा जाना चाहिए। इनकी ऑखों में नये समाज के निर्माण का विराट स्वप्न था। इनकी आध्यात्मिक वाणियों में यह सपना दिखाई देता है – हमारी भाषा में हम इसे "यूटोपिया " कहते है। यूटोपिया यानि आदर्श संकल्पना।

गुरू घासीदास की यूटोपिया को समझने के पूर्व हमें संत रविदास (रैदास) की यूटोपिया "बेगमपुरा" को समझने की जरूरत है।

संत रैदास कहते है –

ऐसा चाहूँ राज मैं जहाँ मिले सबन को अन्न।
छोट–बड़ों सब सम बसै, तब रैदास प्रसन्न।। - (रैदास बानी)

एक भक्त, एक संत भी एक आदर्श राज्य की कामना (इच्छा) करता है। एक ऐसा राज्य जहाँ सबको भोजन और मूलभूत सुविधाएँ समान रूप से प्राप्त हों, जहाँ छोटे–बड़े के नाम पर कोई भेदभाव न हो (आर्थिक, सामाजिक, लैंगिक, भाषायी व अन्य किसी भी प्रकार के भेदभाव जहाँ पर न हो), ऐसे समतामूलक समाज की स्थापना करने वाला राज्य होना चाहिए। संत रैदास की कल्पना, डॉ. बी. आर. अम्बेडकर रचित भारत के संविधान में साकार होती दिखाई पड़ती है, मानों संत रैदास लोकतंत्रात्मक व्यवस्था चाहते थे।

तत्कालीन समय में सामन्ती व्यवस्था, धार्मिक कट्टरता, वर्णव्यवस्था, जातिवाद, छुआछूत, स्त्री शोषण चरम पर थी। उन विपरीत और विषम परिस्थितियों में भी इन संतों की आँखों में आशा की किरण थी, समतामूलक समाज का स्वप्न था, और इसके विराट स्वप्नद्रष्टा है संत रैदास। रैदास

Scanned by CamScanner

की बानी कहती है –

" अब हम खूब वतन घर पाया, ऊँचा खेर सदा मन भाया।।
बेगमपुरा सहर का नाऊँ , दुःख अंदेस नही तिहिं ठाऊँ।।
ना तसबीस खिराजु न मालू, खौफ न खता न तरसु जवालु।
काइमु दाइमु सदा पतिसाही , दाम न साम एक सा आही।
आवादानु सदा मसहूर, ऊहाँ गनी बसहिं मामूर।
तिउं–तिउं सैर करहिं जिउ भावै, हरम महल मोहिं अटकावै।
कह रैदास खलास चमारा, जो उस सहर सों मीत हमारा।।" (1)

वह समतामूलक, लोककल्याणकारी राज्य ऐसा है जो अपना है, जहाँ अपनापन है, जो सदा मन को भाता है। इस देश का नाम बेगमपुरा है– बे–गम अर्थात जहाँ कोई गम (दुःख, पीड़ा) नही है। जहाँ कोई संदेह नही, सब कुछ साफ–साफ स्पष्ट है, गोल–मोल नही। एक ऐसा राज्य जहाँ कोई चिन्ता नही, डर–भय नहीं, शिकायत नहीं, गरीबी और पूंजीवाद से मुक्त, लगान और कर से मुक्त, सभी प्रकार के भेदभाव और पीड़ा , शोषण, अन्याय से मुक्त स्वतंत्र वातावरण है, जहाँ सबको जीने का समान अधिकार है, ऐसा राज्य रैदास को आकर्षित करता है। संत रैदास कहते है कि ऐसे समतामूलक समाज को बनाने वाला और उसमें रहनेवाला हर व्यक्ति हमारा मित्र है। इसके दो अर्थ है – एक तो यह है कि जो समतामूलक समाज की स्थापना का पक्षधर है वही हमारा मित्र है, और दूसरा यह कि ऐसे समाज में कोई किसी का दुश्मन नही है, यहाँ सब एक दूसरे के मित्र हैं। मैत्रीपूर्ण प्रेम ही जहाँ की पहचान है। ऐसे लोक हितकारी समतामूलक समाज की संकल्पना है। बेगमपुरा मामूली (आम) लोगों का लोक है जो सबको बराबर महत्व देता है।

रैदास के इन शब्दों में समता ,स्वतंत्रता, न्याय, बंधुत्व की सारी लोकतांत्रिक अवधारणाएँ समा जाती हैं। रैदास की 'बेगमपुरा' स्त्रीवाची शब्द है जो महिलावर्चस्व की स्वीकार्यता (महिला सशक्तिकरण की अवधारणा) को भी इंगित करता है।

बेगमपुरा की यूटोपिया को कबीर भी स्वीकार करते हुए कहते है –

अवधू बेगम देस हमारा।
राजा रंक फकीर बादसा सबसे कहौ पुकारा।
जो तुम चाहौ परमपद को बसिहौ देस हमारा।
जो तुम आये झीने हो के तजो मन की भारा ।
धरन आकास गगन कछु नाहीं नहीं चन्द्र नहिं तारा।
सत्त धर्म की है महताबे साहेब के दरबारा।
कहै कबीर सुनो हो प्यारे सत्त धर्म है सारा।। – (बीजक)

कबीर के बेगमपुर में राजा, रंक फकीर, बादशाह सभी बराबर हैं, सभी परमपद के अधिकारी हैं। उस देश में किसी के मन पर कोई बोझ नहीं है। वहाँ केवल सत्य की ही सत्ता है। वहाँ धरती, आकाश, सूर्य, चन्द्रमा भी सत्य के नियम से संचालित हैं। वहाँ झूठ, कपट, छल, बेईमानी, असत्य, अनाचार के लिए कोई जगह नही हैं। जहाँ सत्य ही मालिक है और प्रकषति से मनुष्य तक सभी सत्य के अनुयायी हैं, ऐसा प्राकषतिक जीवन आधारित वह देश प्राकषतिक (नैसर्गिक) न्याय के सिद्धांत पर आधारित समाज व्यवस्था कबीर का आदर्श (यूटोपिया) है।

Scanned by CamScanner

कबीर बेगमपुरा को 'अमरलोक' (अमरपुर) भी कहते हैं –

अमरपुर ले चल हो सजना।
वोहि रे अमरपुर लागि बजरिया, सौदा है करना।
वोहि के अमरपुर संत बसतु है, दरसन है लहना।
संत समाज सभा जहँ बैठी, वहीं पुरूष अपना।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, भवसागर है तरना।। - (बीजक)

उस अमरपुर(अमरलोक) को चलने का आहवान भी कबीर करत हैं। उस अमरपुर में बाजार भी है, जहाँ अपने–अपने जरूरत की चीजे खरीदी जा सकती हैं, अर्थात वह नगर सुविधासम्पन्न है। उस नगर में अच्छे स्वभाव (दया, क्षमा, करूणा, सहयोग, प्रेम, मैत्री) वाले लोग–संत लोग वास करते हैं और जहाँ संत सज्जन लोग निवास करते हैं वही पुरूष (परमात्मा) निवास करता है।

कबीर कहते हैं कि मेरा परमात्मा लोक (जन के बीच) में निवास करता है। ऐसे लोक की कल्पना कबीर करते हैं जहाँ मनुष्य में ही परमात्मा बसता है वहाँ मानवीय मूल्य और ऊँचे आदर्श–लोगों की जीवनशैली में रच बस गये हैं। लोक कल्याणकारी राज्य एवं समता मूलक समाज की कल्पना उनके पदों में दिखाई देती हैं। इसीलिए कबीर के संबंध में विद्वान कहते हैं –

" कबीर की कविता पसीने से सराबोर एक बुनकर की कविता है। प्रेम–निर्झर में नहाते निर्लेप संत की कविता है। वह यथार्थवादी जीवन की ठोस कविता है। समाज की विश्रृंखलता और अनगढ़ता को सँवार एवं तराश कर सुंदर रूप देने की गहनीय कुशलता कबीर काव्य में मौजूद है।(2)

कबीर ने हिन्दू–मुस्लिम, ब्राह्मण–शूद्र, स्त्री–पुरूष, अमीर–गरीब सभी तरह के भेदभाव को करीब से देखा था इसलिये वे वर्णविहीन और वर्ग विहीन लोकतांत्रिक समतावादी समाज की कल्पना करते हैं। जहाँ इन्सान का इंसान से प्रेम का रिश्ता इतना मजबूत हो कि सारे भेदभाव मिट जायें–

" हम वासी उस देश के जहाँ बारह मास विलास ।
प्रेम झरे विकसे कंवल, तेज पुंज परकास।।
हम वासी उस देश के जहाँ जाति बरन कुल नाहिं।
सबद मिलावा होय रहा, देह मिलावा नाहिं।।(3)

उस देश में बारहो माह आनंद ही आंनद है प्रेम ही प्रेम है, कोई दुःख, तनाव, शत्रुता, भेदभाव नहीं है। शरीर के तल पर वहाँ कोई भेदभाव ही नहीं। ऐसे प्रेम और शांति से परिपूर्ण समाज की कल्पना कबीर करते हैं। उनके इस आदर्श राज्य में जाति, वर्ण, कुल के लिए भी कोई स्थान नहीं है।

कविवर रहीम नें भी एक ऐसे राजसत्ता की कल्पना की है जो सूर्य की तरह तपाने (झुलसाने) वाली न हो बल्कि चन्द्रमा के समान शीतलता प्रदान करने वाली हो –

" रहिमन राज सराहिए, ससि सम सुखद जु होई।
कहा बापुरो भानु है, तप्यौ तरैयनि खोइ।।"(4)

ऐसी शासन सत्ता जो प्रजा (जनता) को दुःख देने वाली न हो बल्कि संरक्षण व सहयोग प्रदान करने वाली हो। दूसरे शब्दों में निरंकुश, तानाशाही (राजतंत्र) न हो बल्कि जनता का, जनता के लिये, जनता द्वारा शासन (लोकतंत्र) हो। रहीम राजा और प्रजा के भेद को समाप्त कर मैत्रीपूर्ण समतावादी लोकतंत्रात्मक गणराज्य की कल्पना (यूटोपिया) दे रहे है।

Scanned by CamScanner

रहीम का काल भी अस्थिरता, अराजकता और अंतर्कलह का काल है अतः भक्त कवि रहीम भी सुखद, सुव्यवस्थित लोकहितकारी समाज व्यवस्था व सुशासन की कामना करते हैं।

संत रैदास और कबीर की बेगमपुरा की यूटोपिया से प्रेरित होकर महाकवि तुलसीदास ने 'रामराज्य' की संकल्पना प्रस्तुत की। जहाँ राम के राज्य में प्रजा पूरी तरह प्रसन्न है। परन्तु 'रामराज्य' की संकल्पना में तुलसी ने पुनः वर्णव्यवस्था को स्थापित करने का प्रयास किया –

" रामराज बैठे त्रिलोका, हरषित भये गए सब शोका।
बयरू न कर काहू सन कोई राम प्रताप विषमता खोई।
वरनाश्रम निज निज धरम निरत वेद पथ लोग।
चलहि सदा पावहिं सुखहिं, नहिं भय शोक न रोग।" - *(रामचरित मानस)*

तुलसी के रामराज्य की कल्पना में वे लोग सुखी है जो वर्णाश्रम व्यवस्था का पालन करते हैं, श्रुति, नीति, वेद के अनुसार चलते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि रैदास और कबीर की समतामूलक समाज की संकल्पना को खत्म करने के लिए ही मनुस्मषति से प्रेरित 'रामराज्य' की यूटोपिया तुलसी ने दी। यह बेगमपुरा की नकल होकर भी उसके बिल्कुल विपरीत निर्मित है। ऐसा लगता है कि रैदास और कबीर की संकल्पना से जो समतामूलक समाज निर्मित हो रहा था, 'रामराज्य' की संकल्पना से वह अधूरा रह गया और पुनः विषमतावादी सामाजिक ढाँचा खड़ा होने लगा। रामचरित मानस की लोकप्रियता के साथ–साथ तुलसी और उनकी संकल्पना ने लोगो पर असर किया और धीमा जहर की तरह समाज पर जाति–वर्ण व्यवस्था का पुनः प्रभाव पड़ने लगा।

गुरू घासीदास जी के काल तक आते आते भारतीय समाज हिन्दू–मुस्लिम, जात–पाँत, छुआछूत के दुष्प्रभाव में आ चुका था। मध्य भारत में मुगल, मराठा, पेशवा, अंग्रेज, सामन्त कोई भी शासक धार्मिक एवं सामाजिक कुरीतियों में हस्तक्षेप करना नही चाहते थे, इसलिए अप्रत्यक्षतः वर्णाश्रम व्यवस्था शासन सत्ता के संरक्षण में चरम स्थिति पर आ रही थी। डॉ. हीरालाल शुक्ल लिखते हैं –

"The Anglo - Maratha rulers decided not to interfere in the religious life or the social customs of the people under their rule. The hard crust of the caste-system in Chhattisgarh was increasing its deadening effect on the Dalits or the so- called low-caste people."(5)

गुरू घासीदास मध्यभारत के विषमताप्रूर्ण दयनीय स्थिति से भलीभाँति परिचित थे। वे मानवता के पक्षधर थे अतः अपने समय में हो रहे अन्याय, अत्याचार, शोषण, दमन व अमानवीय कृत्यों के प्रति संवेदनशील, सजग व सावधान थे। वे भलिभाँति जानते थे कि धार्मिक संकल्पनाओं माध्यम से ही सामाजिक परिवर्तन लाया जा सकता है। अतः उन्होने धर्म के उच्चतम आदर्शों और मानवीय मूल्यों को आचरण में उतारने की कोशिश की। इसके लिए उन्होने 'सतनाम ' महामंत्र दिया। आदर्श राज्य की संकल्पना में उन्होने ' सतलोक' की यूटोपिया को सामने रखा। उनके 'सतलोक की अवधारणा का इतना प्रभाव पड़ा कि विभिन्न जाति–धर्म के लोगो ने उनके सतनाम पंथ में दीक्षा लेकर 'सतनाम अनुयायी ' बनना स्वीकार किया–

" बाम्हन, बनिया, छत्री, शुद्र
चारों बरन के लोग, टोरिन भेद भरम के रोग

Scanned by CamScanner

बनिन सतनामी ग
घासीदास बाबा ह
पंथ ल चलाइन ग " – (पंथी गीत)

यह सतनाम समग्र मुक्ति का मार्ग है, द्वार है, मास्टर चाबी है।

ऐसा कहा जाता है कि गुरू घासीदास ने 'सतलोक' से सतनाम को लाया –

" सन्ना ना नन्ना मोर नन्ना हो ललना
एक पेंड़ अँवरा, दूसर पेड़ धँवरा
सत के नाम सतलोक ले लाये साहेब
नाम लेके आये साहेब नाम लेके आये
नाम के डंका गिरौद म बजाये
नाम लेके आये सतनाम लेके आये " – (पंथी गीत)

सतलोक वह देश है जहाँ सतनाम की उत्पत्ति है। सतलोक के द्वारा गुरू घासीदास ने स्वर्ग –नर्क की अवधारणा को भी खंडित किया –

" सबों संतों आवव जुरमिल गावव
सतनाम सतनाम सतनाम हो
झांझ मंजीरा अऊ मांदर बजावव
सतनाम सतनाम सतनाम हो
सतनाम ल जपोकृकृकृकृ सतनाम ल भजो
मुँह हालय झन जीभ हर डोलय
सब्द सुवासा म बोलय
छय मुँहटा ल नाक के हंसा
सतलोक मुँहटा ल खोलय
सरग–नरक के ढोंग ल छोड़व
चलव चलव सतधाम हो
सतनाम ल जपोकृकृकृकृ सतनाम ल भजो " – (पंथी गीत)

सतलोक वह देश है जहाँ भय, दुःख, अंधकार, अशांति नही है वहाँ ज्ञान, अभय, प्रकश, सुख और शांति है। सतनाम ग्रंथ निर्भय सागर शब्दावली में उल्लेखित है कि –

"सत्य पुरूष निर्भय निर्वाना
निर्भय हंस वहाँ निर्भय ज्ञाना।
निर्भय लोक द्वीप सब झारी,
सुख सागर सब दुःख भव हारी।।" (6)

सतलोक सुख का सागर है वहाँ कोई दुःख नही। सतलोक को 'सतधाम', 'सतपुर', 'अमरलोक' आदि भी कहा गया है। गुरू घासीदास के सतलोक में आनंद ही आनंद है वहाँ शोक, मोह, दुःख नही है, पूर्ण विश्राम और शांति वहाँ उपलब्ध है –

" सतपुर आनंद धाम है, शोक, मोह दुःख तहाँ नही।
हंसन को विश्राम है, पुरूषलोक अचमन सुधा।।" (7)

Scanned by CamScanner

वहाँ रोज–रोज (क्षण–क्षण) मरने की पीड़ा भी नही है, शाश्वत जीवन का , प्रेम रूपी अमृत का, ज्ञानामृत का सतत प्रवाह है । उस सतलोक में सूर्य–चन्द्रमा में कोई भेद नही है, दिन और रात में कोई भेद नहीं, सबका समान महत्व है। सतलोक में वर्ण और जाति का भी कोई अस्तित्व नही है –

" चंद न सुरूज दिवस नही राति,
वर्ण भेद नहीं जात कुजाति।"(8)

उस सतलोक में ब्रम्हा, विष्णु, महेश तैंतीस कोटि देवता, वेद पुराण किसी के लिए कोई स्थान नही–

" तैंतीस कोटि देवता नाहिं,
और अनेक बताऊ काहीं।
ब्रम्हा, विष्णु महेश न रहिया,
साखे वेद पुरान न रहिया।
तब सब रहै पुरूष के माहीं
जो वट वक्ष के मध्य रहे छांही। "(9)

उस सतलोक में सत्य का आचरण करने वाले सत्यस्वरूप सतपुरूष का निवास होता है। सतलोक में रहने वाले सतपुरूष ही हो सकते है। व्यवहारिक भाषा में आदर्श स्थान में आदर्श लोगों (सच्चे लोग) रहते है। सच्चे लोगों का लोक ही सत (सच) लोक है।

गुरू घासीदास ने अन्य संतों की भांति ही सतलोक को अपना घर (निवास) माना है –

"सतलोक से तुम चलि आया,
जम्मू द्वीप मंझारा।
सही छाप परवाना लाया,
तुम साहेब कड़िहारा" (10)

सतलोक ज्ञान का स्रोत है, विराट चेतनाएँ, जागष्त चेतनाएँ सतलोक का ज्ञान और प्रेरणा प्राप्त करती हैं।

सतलोक वह स्थान है जहाँ आपसी सहयोग, समन्वय और सहभागिता से शांति और स्थिरता प्राप्त होती है, वहाँ भटकाव नहीं रहता, विश्राम और थिरता आती है। –

" सतलोक के नारियल, अगर लोक के तीर
घासीदास गुरू बाँह दिये हंस लगाओं थीर।"(11)

सतलोक या अमरपुर का वर्णन इस प्रकार किया गया है –

" समरथ की गति को लखै, शिव विरंचि नहीं जान।
काल अकाल तहाँ नहीं, पूरण पद निर्वाण।।
समरथ नाम अमरपुर, अजर द्वीप स्थान।
उहाँ रहत है हंसा सब, पावाहिं पद निरवान।।(12)

सतलोक में सभी मनुष्य बौद्धिक, आर्थिक, सांस्कृतिक सभी दषष्टि से समर्थ हैं वे स्वावलंबी हैं, शक्तिशाली हैं, अभय को उपलब्ध है, वे निर्वाण (परमपद) को पाने योग्य हैं, वे किसी मष्त्यु भय से भयभीत नहीं हैं। सतलोक में सबके कि लिए स्थान है वहाँ योग्यता–अयोग्यता का कोई प्रश्न नहीं है, वहाँ पात्र–अपात्र का कोई शर्त नहीं है। सतलोक सबके लिये समान रूप से उपलब्ध हैं,

Scanned by CamScanner

सभी अपने उच्चतम अवस्था (विकास) को प्राप्त कर सकते हैं। वहाँ कोई प्रतिस्पर्धा भी नहीं है इसलिए समता और बन्धुत्व सहज विद्यमान है।

सतलोक में 'मनखे मनखे एक बरोकर' (अर्थात मानव–मानव एक समान) की समतामूलक स्थिति है। वहाँ स्त्री–पुरूष, काला–गोरा, वृद्ध–बालक, अमीर–गरीब, देशी–विदेशी, ज्ञानी–अज्ञानी, ऊँच–नीच का कोई भेदभाव नहीं है। गुरू घासीदास कहते है –

मनखे करिया हो, के गोरिया हो ए पार के हो, के ओ पार के हो, मनखे–मनखे आय, मनखे मनखे एक बरोबर होथे। (अर्थात मानव काला हो या गोरा हो, इधर का हो या उधर का हो, मनुष्य आखिर मनुष्य होता है, मानव–मानव एक समान हैं) यह उदघोषणा समतामूलक समाज की सबसे बड़ी उदघोषणा है। सतलोक में मानव केवल मानव है, जहॉ चेतना के तल पर सब समान है। सतलोक में सत का वास है जिससे सषष्टि निर्मित है –

" सत से उपजे धरती, सत से खड़े आकास हे
सत में चंदा, सत में सुरूज, सत में पवन प्रकाश हे
सत से सषष्टि उपजे, कहं गये गुरू घासीदास हे।। – (पंथी गीत)

गुरू घासीदास प्राकषतिक (ब्रम्हाण्डीय) नियम की बात कह रहे है कि नियम सबके लिये समान हो। न्याय सबके लिये समान हो। एक ही सत से सूर्य चन्द्र, पथ्वी, पवन, प्रकाश, सषष्टि का निर्माण हुआ है समस्त मनुष्य एवं जीव जंतुओं का जन्म हुआ है अतः सषष्टि(अस्तित्व) में सभी समान है, न केवल मनष्य वरन् ब्रम्हाण्ड का कण –कण एक ही सत् से निर्मित है। सतलोक वह देश है जहॉ मानव और प्रकषति सजीव एवं निर्जीव, पदार्थ एवं ऊर्जा सभी एक समान है उनमें कोई भेद नही, दषष्टि और समझ का फर्क है। दषष्टि और समझ के अंतर के कारण ही जाति, धर्म,भाषा, लिंग,वर्ण, वर्ग के सब झगड़े है। सतलोक में एकता है। सतलोक में ज्ञान का प्रकाश है, चेतना का निवास है –

" बासा बासा साहेब हो गगन मंदिर म तोर बासा
सतलोक में निवासा हो निरमल ग्यान प्रकासा " – (पंथी गीत)

ज्ञान का सत्य का प्रकाश पाकर चेतना का अज्ञान रूपी अंधकार मिट जाता है। चेतना जाग्रत होती है। चेतना की जाग्रत स्थिति में जड़–चेतन सबके भीतर सत स्वरूप दिखलायी पड़ता है, मैं और तू के सब भेद मिट जाते है, सत्य की सत्ता सर्वत्र दिखायी देती है।

श्रम (सतनाम साधना) का लक्ष्य सतलोक तक पहुँचाना है। गुरू घासीदास ने कहा सतलोक यानी चेतना लोक (चैतन्य लोक) चेतना की परम जागरण की अवस्था ही सतलोक है। सतलोक वह देश है जहाँ हर व्यक्ति की चेतना जागष्त हो। चेतना जागष्त होते ही सारे पाप अपराध, विषमता, अन्याय, अत्याचार, हिंसा, झूठ, असत्य, बेईमानी, शोषण सब छूट जाते है। तब भयमुक्त, अपराधमुक्त, शांतिप्रिय, विकसित, जागष्त समाज का निर्माण होता है। शिक्षा, ज्ञान, ध्यान, मनन, अध्ययन से चेतना को जागृत किया जा सकता हैं जागे हुए लोगों के लोक (देश) को ही 'सतलोक' कहा गया है।

भारतीय मनीषियों ने भी सातलोक, सातचक्र, और सात शरीरों की चर्चा की है। चक्रों में– मूलाधार, सवधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्धि, आज्ञा और सहस्रार प्रमुख सात चक्र है जिनमें सातवाँ चक्र (लोक) – सहस्रार को माना गया है। सात लोको में भूलोक, भुवः लोक, स्वः लोक,

Scanned by CamScanner

तपलोक, महलोक, जनलोक और सतलोक माने गये है।[13] सतलोक सर्वोच्च माना गया है।

सतलोक परमलोक है। यह लोक समस्त कषत्रिम व्यवस्थाओं से उपर प्राकषतिक व्यवस्था का लोक है। मनष्ष्य प्राकषतिक रूप से न गरीब है, न मुसलमान है, न शुद्र है न विद्वान– वह तो मानव मात्र है। गुरू घासीदास का सतलोक अस्तित्व के साथ एक होकर प्राकषतिक जीवन की ओर चलने का संकेत करता है। सत से जुड़ जाना सुख है, सत से बिछुड़ जाना दुःख है, सत में लीन हो जाना मोक्ष है और यह मोक्ष सतलोक में ही संभव है।

सतलोक में सभी मनुष्यों के जीने की समान स्वतंत्रता और व्यवस्था है। सतनाम पंथ में कहा गया है –"रोटी , कपड़ा और मकान, ये तीनों सतलोक समान"।

अर्थात् जीवन की मूलभूत सुविधाएँ प्रत्येक व्यक्ति को सहज ही समान रूप से उपलब्ध होनी चाहिए, तब वह देश सतलोक के समान है। गुरू घासीदास ने अपने समय में किसी भी व्यक्ति को भूखे प्यासे नही रहने दिया। उन्होने गरीब और जरूरत मंद लोगों की सेवा को प्राथमिकता दी। अपने अनुयायियों की सहायता से उन्होने प्रत्येक भूखे परिवार तक अनाज (पहुँचवाने) की व्यवस्था की। राजमहन्त, महन्त, भंडारी, सॉटीदार नियुक्त कर उन्होने विशाल संगठन खड़ा किया और सतलोक की यूटोपिया को व्यावहारिक धरातल पर अमलीजामा पहनाया। जगह–जगह पर उनके केन्द्र थे, वे रावटी (पड़ाव) यात्रा भी करते थे। समता, स्वतंत्रता, न्याय, बंधुत्व, संगठन, आदर्श आचरण, सेवा, परोपकार, त्याग, समर्पण, मैत्री की भावना के साथ गुरू घासीदास और उनके अनुयायी, 'समतामूलक समाज' की स्थापना में और चेतना के उत्थान में लगे रहे। सतलोक का सपना उन्होने स्वयं साकार करने का प्रयास किया।

उनके सतनाम और सतलोक का इतना व्यापक प्रभाव पड़ा कि बिना अस्त्र–शस्त्र के ही उन्होने मध्यभारत को अनेक बुराइयों से मुक्त कर लिया। डॉ. हीरालाल शुक्ल लिखते है –

"Ghasidasa's moral force was immense and worked miracles. It eradicated the anti social elements from the lands of Chhattisgarh and Central India without holding a weapon. with this spritual army, he killed the inner enemies of human beings, he made them really, humane."[14]

बुराई से मुक्त जागष्त समाज ही सतलोक है। सतलोक यानि अच्छे गुणों से, सुख शांति, समषद्धि, रस और आनंद से भरा हुआ स्वस्थ समाज। इस स्वस्थ जाग्रत समाज के निर्माण के लिए गुरू घासीदास ने नारा दिया –" सत ही मानव का आभूषण है" अर्थात् अच्छे गुणों से ही मनुष्य का व्यक्तित्व शोभायमान होता है। न जन्म से, न जाति–धर्म से , न धन से, न पद से, बल्कि गुण कर्म से व्यक्ति श्रेष्ठ और उत्तम होता है। एक ऐसा समाज जहाँ लोग अपने गुणों और कर्मो से पहचाने और सम्मानित किये जायें। तुलसी ने रामचरित मानस में लिखा है–

"पूजिय विप्र शीलगुण हीना, शुद्र न पूजिये ज्ञान प्रवीना।।"

वर्ण व्यवस्था के इस पोषक वाक्य को खंडित करता है, गुरू घासीदास का उपरोक्त वाक्य –' सत ही मानव का आभूषण है।"

यदि आप सत के साथ है तो शोभायमान है, फिर चाहे आप किसी भी जाति–धर्म के हो, अन्यथा सत के बिना आपका कोई मूल्य नहीं। सतलोक में मनुष्य जन्म से नही वरन् कर्म से श्रेष्ठ होता है।

Scanned by CamScanner

गुरू घासीदास का सतलोक वह है जहाँ हमें अपने वास्तविक स्वरूप का बोध हो, स्वयं का यथार्थ बोध हो, आत्मज्ञान हो। यह 'स्व ' का ज्ञान ही एक दिन सत का ज्ञान बन जाता है। सत के ज्ञान से ही सारा अज्ञान मिट जाता है। गुरू घासीदास का सतलोक जागरूक, चेतनावान समाज का प्रतीक है।

इस प्रकार हम देखते है कि रैदास, कबीर, गरू घासीदास आदि संतों ने मनुष्य के उच्चतर विकास के लिए जो सपने देखे उन्हे माँडल रूप में हमारे समक्ष प्रस्तुत किये और गुरू घासीदास ने तो उसे साकार करके दिखाया। बेगमपुरा, अमरलोक, सतलोक की यूटोपिया निश्चित रूप से अध्यात्मिक है, पर इनमें संसार और समाज को भी व्यवस्थित दिशा देने की अपूर्व क्षमता है। आज विषमता और अराजकता के माहौल में इनकी प्रासंगिकता बढ़ जाती है। आज न केवल भारत अपितु पूरा विश्व आतंकवाद, नक्सलवाद, हत्या, लूट, बलात्कार, चोरी, डकैती, नस्लीय हमले ,साम्प्रदायिक दंगे, रंग और जाति के भेदभाव, वर्ग और वर्ण की विषमता, तनाव,कुशासन व अराजकता से पीड़ित और त्रस्त है। ऐसे युग में बेगमपुरा, अमरलोक और सतलोक ही शिक्षित, शांत, स्वस्थ, समष्द्ध, जागरूक और सुखी विश्व के सपने को साकार करने का विकल्प प्रस्तुत करते है। ये यूटोपिया भारत के संविधान में भी चित्रित है। यदि भारतीय संविधान का ठीक से पालन सुनिश्चित किया जाये तो समतामूलक आदर्श समाज की स्थापना में देर नही लगेगी। मानवतावाद की स्थापना एवं राष्ट्र ही नही अपितु मानवमात्र के विकास के लिए इन यूटोपिया को वर्तमान सरकारों के द्वारा संवैधानिक रूप से अमलीजामा पहनाये जाने की जरूरत है।और जब तक बेगमपुरा या सतलोक हमारे समक्ष निर्मित न हो जाये तब तक हमारी तीव्र उत्कण्ठा होनी चाहिए कि –

" चल हंसा अमरलोक जइबो
इहाँ हमर संगी कोनो नइये " – (पंथी गीत)

तमाम अव्यवस्थाओं के बीच रहते हुए भी हमें निराश नही होना है बल्कि उस समतामूलक समाज की स्थापना के लिए आजीवन सतत प्रयत्नशील रहना है क्योकि मंजिल हमारी बेगमपुरा है, अमरलोक है, सतलोक है।

Scanned by CamScanner

संदर्भ –सूची

1) रैदास बानी – रैदास (संपा. शुकदेव सिंह), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, 2003 (दुसरी आवृत्ति 2011), पद – 4; पृष्ठ 44
2) शब्द विवेकी कबीर – संपा. डॉ. तेजसिंह, भावना प्रकाशन दिल्ली, 2004, पृष्ठ– 156
3) वही पष्ठ 156
4) हिन्दी संत साहित्य की परम्परा –डॉ. प्रेम नारायण शुक्ल, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन नई दिल्ली, 1988, पृष्ठ– 24
5) Guru Ghasidasa and His Satnam Philosophy - H. L. Shukla, B.R. Publishing corporation India Delhi, 2004, Page - 34
6) सतनाम पंथ और सतनामी एक आत्मचिंतन – सुदर्शन सिंह कुर्रे, अग्रवाल प्रिंटर्स कवर्धा, पृष्ठ – 2
7) वही पृष्ठ – 2
8) वही पृष्ठ – 2
9) वही पृष्ठ – 5
10) वही पृष्ठ – 22
11) वही पृष्ठ – 65
12) वही पष्ठ – 52, 53
13) www. akhandjyoti. org/www.awgp.org -Akhand Jyoti, July 1976, Page - 26
14) Guru Ghasidasa and His Satnam Philosophy - H. L. Shukla, B.R. Publishing corporation India Delhi, 2004, Page - 35

अन्य सहायक संदर्भ

1) गुरू घासीदास संघर्ष समन्वय और सिद्धांत – हीरालाल शुक्ल
2) गुरू घासीदास के उपदेशों का दार्शनिक अनुशीलन (पी.एच.डी. शोध प्रबंध)– डॉ. हेमंत पाल घृतलहरे
3) बीजक – कबीर
4) रामचरित मानस – तुलसीदास
5) पंथी गीतो के आडियों कैसेट्स (2001–2008)
6) सत्यालोक (पत्रिका) एवं सतनाम संदेश (पत्रिका)

●●●

Scanned by CamScanner